



बधाई



- **प्रो. आदितेश्वर सेठ**
कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग

SIGCHI सोशल इम्पैक्ट अवार्ड 2022 के लिए चुना गया।



- **प्रो. सौरव बंसल**
कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग

क्वालकॉम फैकल्टी अवार्ड 2022 प्रदान किया गया।



- **प्रो. पुलक एम. पाण्डेय**
यांत्रिक इंजीनियरी विभाग

यांत्रिक एवं एरोस्पेस इंजीनियरी के भारत में शीर्ष वैज्ञानिकों की श्रेणी में "Research.com.pdf-लीडिंग एकेडमिक रिसर्च पोर्टल Research.com.pdf" में सूचीबद्ध।



- **प्रो. अनिल वर्मा**
रासायनिक इंजीनियरी विभाग

आपका प्रस्ताव DST के "नेशनल इन्नोवेशन चैलेंज अवार्ड्स" (NICA2020) के अन्तर्गत समर्थित हैं। नेशनल इन्नोवेशन चैलेंज अवार्ड्स के अन्तर्गत देश में केवल 2 प्रस्तावों का चयन किया जाता है।



- **प्रो. यामा दीक्षित**
वायुमण्डलीय विज्ञान केन्द्र

नेचर कम्युनिकेशन्स अर्थ एन्ड एनवायरनमेंट जर्नल के सम्पादकीय बोर्ड में शामिल किया गया है।



- **प्रो. एम. अली हैदर**
रासायनिक इंजीनियरी विभाग

अनुभवी शोधकर्ता के रूप में TUM कैटालाइसिस रिसर्च सेन्टर का दौरा करने के लिए अलेक्जेंडर वान हेमबोल्डट फाउन्डेशन द्वारा हेमबोल्डट रिसर्च फेलोशिप प्रदान की गई है।



- **प्रो. विपिन कुमार**
ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग

"फ्रंटियर इन एनर्जी रिसर्च" जर्नल के समीक्षा सम्पादक (Review Editor) के रूप में सेवाएं देंगे। संस्थान समुदाय एवं हिन्दी कक्ष की ओर से उपरोक्त सभी संकाय सदस्यों को बधाई।

स्वागत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/25415 दिनांक 30.3.2022 के अनुसार डॉ. (सुश्री) गरिमा गौड़ ने 28.3.2022 से संस्थान के कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में पोस्ट-डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt-II/2022/26443 दिनांक 31.3.2022 के अनुसार श्री धवलभाई मनसुखभाई रैयणी ने 25.3.2022 से संस्थान के केन्द्रीय कार्यशाला में 7वें वेतन आयोग की वेतन मैट्रिक्स के अनुसार लेवल-5 में वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt-II/2022/26426 दिनांक 31.3.2022 के अनुसार श्री कृष्ण कुमार पाठक ने 25.3.2022 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में 7वें वेतन आयोग की वेतन मैट्रिक्स के अनुसार लेवल-5 वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

आई.आई.टी. दिल्ली कर्मचारी संघ चुनाव-2022

कुलसचिव कार्यालय की विज्ञप्ति सं. IITD/RS-ICDN/Union/27648 दिनांक 5.4.2022 के अनुसार 25 मार्च, 2022 को आयोजित आई.आई.टी. दिल्ली कर्मचारी संघ चुनाव-2022 में निम्नलिखित उम्मीदवारों को दो साल की अवधि के लिए उनके नाम के सामने उल्लिखित पदों पर चुना गया है—

1. श्री हेमंत गौड़ — प्रधान
2. श्री अजय कुमार — उप प्रधान
3. श्री नरेंद्र कुमार — उप प्रधान (विद्युत इंजीनियरी विभाग)
4. श्री राजीव कुमार दहिया — महासचिव
5. श्री नरेंद्र कुमार — अतिरिक्त सचिव (रसायनिक इंजीनियरी विभाग)
6. श्री रणवीर सिंह — अतिरिक्त सचिव
7. श्री रजनीश अग्रवाल — कोषाध्यक्ष

त्यागपत्र स्वीकृत

स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-II/2022/26910 दिनांक 1.4.2022 के अनुसार सुश्री पूनम चौहान, कनिष्ठ सहायक (लेखा अनुभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 9.3.2022 से स्वीकार कर लिया है। अतः उन्हें 9.3.2022 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

योग एवं स्वास्थ्य— वैज्ञानिक पक्ष

—स्वामी रामदेव

योग एक मात्र वैकल्पिक पद्धति नहीं अपितु योग का प्रयोग परिणामों पर आधारित एक ऐसा प्रमाण है जो व्याधि को निर्मूल करता है। अतः यह एक सम्पूर्ण विधा का शरीर रोगों के लिए ही नहीं बल्कि मनस रोगों का भी चिकित्सा शास्त्र है। हमने अष्टचक्रों की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि का जब अन्वेषण किया एवं प्राचीन सांस्कृतिक शब्दों का जब आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया तो पाया कि मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, हृदय, अनाहत, आज्ञा एवं सहस्रार चक्र क्रमशः प्रजनन (Reproductive), उत्सर्जन (Excretory), पाचन (Digestive), कंकाल (Skeletal), परिसंचरण (Circulatory), श्वसन (Respiratory), तंत्रिका (Nerves) एवं अंतःस्रावी (Endocrine) तंत्र से संबद्ध है। मूलाधार से सहस्रार चक्र तक अष्टचक्रों का जो कार्य है वही कार्य रिप्रोडक्टरी से लेकर एन्डोक्राइन तंत्र का है। क्रियात्मक योगाभ्यास के सात प्राणायाम इन्हीं अष्टचक्रों अथवा आठ तंत्रों को सक्रिय एवं संतुलित बनाते हैं।

सिम्टोमैटिक एवं सिस्टेमिक ट्रीटमेन्ट आधुनिक चिकित्सा विज्ञान पर आधारित चिकित्सा प्रणाली का संवाहक है, वहीं योग एवं आयुर्वेद सिस्टम को संतुलित करके समस्त रोगों को निर्मूल करने का विज्ञान है। मलेरिया एवं टी.बी. आदि बीमारियों को छोड़कर एलोपैथी में हाइपरटेंशन, डायबिटीज, अस्थमा व थायरॉयड आदि व्याधियों को मेन्टेन (नियंत्रित) करने के लिए दवा दी जाती

है। इन बीमारियों का स्थाई उपचार (परमानेंट क्योर) एलोपैथी में नहीं है जबकि योग एवं प्राकृतिक जीवन शैली के द्वारा बी.पी. थायरॉयड व अस्थमा जैसी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। प्राणायाम को यदि हम दो भागों में विभक्त करते हैं, एक अनुलोम-विलोम के पहले व दूसरा अनुलोम-विलोम के बाद तो भस्त्रिका, कपालभाति, बाह्य प्राणायाम की प्रक्रियाएं हमारे रिप्रोडक्टरी, एक्सक्रेटरी, डाइजेस्टिव, स्केलेटल सिस्टम को समग्र रूप से संतुलित व स्वस्थ बनाती हैं वहीं अनुलोम-विलोम, भ्रामरी, उदगीथ व प्रणव प्राणायाम सर्कुलेटरी रेस्पिरेटोरी, नर्वस व एण्डोक्राइन सिस्टम को पूर्णतः संतुलित कर हमें सम्पूर्ण आरोग्य देते हैं। योग की तरह आयुर्वेद की भी जड़ी-बूटियाँ एवं अन्य औषधीय प्रक्रियाएं हमारे आठों सिस्टम के ऊपर ही कार्य कर उनकी अन्तः प्रणाली को संतुलित करती हैं। उदाहरण के लिए शिलाजीत समस्त रोगों में काम करती है। चरक संहिता में भी कहा गया है— 'न सोऽस्ति रोगो भूवि' अर्थात् दुनिया में कोई ऐसा रोग नहीं है जो शिलाजीत से ठीक नहीं होता हो क्योंकि शिलाजीत का रिप्रोडक्टिव सिस्टम से लेकर रेस्पिरेटोरी सिस्टम तक प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अर्थात् इससे स्पर्म काउंट बढ़ता है व अन्य यौन विकार दूर होते हैं। मूत्र सिस्टम की विकृतियाँ मिटती हैं साथ ही डाइजेस्टिव सिस्टम को भी संतुलित करके यकृत व अग्नाशय के विकारों को दूर करने में शिलाजीत उपयोगी है। हड्डियों एवं मांसपेशियों को सुदृढ़ करके स्केलेटल व सर्कुलेटरी सिस्टम को ठीक कर शरीर का ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम पूरी तरह ठीक कर देती हैं। फेफड़ों को ताकत देकर शिलाजीत रेस्पिरेटोरी सिस्टम की तमाम बीमारियों को दूर कर देती है। जब ये छः सिस्टम ठीक से कार्य करते हैं तो हमारा ऑटोनोमिक व वोलेन्टरी नर्वस सिस्टम भी नियन्त्रित रहता है।

इसी प्रकार शरीर की सम्पूर्ण अन्तः प्रणाली जब संतुलित रहती है तो अन्तःस्रावी ग्रंथियाँ अर्थात् हमारा एण्डोक्राइन सिस्टम भी ठीक रहता है। इस प्रकार परोक्ष रूप से शिलाजीत आठों सिस्टमों को ऊर्जा व आरोग्य देती है। अतः अकेली शिलाजीत सब रोगों को

ठीक करती है। शिलाजीत की तरह की अन्य एकल औषधि व एकल जड़ी बूटी (एक-एक औषधि व एक-एक जड़ी-बूटी) अनेकों रोगों को दूर करती है। एलोपैथी में ऐसा नहीं है। वहां प्रत्येक रोग की अलग दवा है क्योंकि वह दवा कुछ लक्षणों (सिम्पटम्स) को नियन्त्रित करती है, सिस्टम पर काम नहीं करती इसलिए एलोपैथी की एक दवा अनेक रोगों पर काम नहीं करती है। हम योग व आयुर्वेद से लाक्षणिक चिकित्सा न करके कारण का निवारण करते हैं। मूल को ठीक करते हैं अर्थात् मूलाधार से लेकर सहस्रार तक अष्टचक्र या आठ सिस्टमों को स्वस्थ व ऊर्जावान बनाते हैं। यही सैद्धान्तिक भेद है—हमारी परम्परागत प्राचीन चिकित्सा पद्धति व आधुनिक चिकित्सा पद्धति में। इसलिए दोनों चिकित्सा विधाओं का दर्शन ही अलग-अलग है। अतः चिकित्सा को लेकर मतभेदों को मिटाना है तो अज्ञान, पूर्वाग्रह, स्वार्थ व अहंकार से ऊपर उठकर दोनों चिकित्सा विधाओं के सैद्धान्तिक मान्यताओं को ठीक से समझना होगा।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि शरीर में होने वाले समस्त मानसिक एवं शारीरिक रोग तनाव की अवस्था में शरीर में स्त्रावित होने वाले स्ट्रेस हार्मोन्स की अधिकता एवं गुड हार्मोन्स के कम स्रावित होने के कारण होते हैं। स्वामी जी महाराज के योग-विज्ञान शिविरों में अनेकों व्यक्तियों पर किये गये बृहत् परीक्षणों से यह बात सिद्ध हो गयी है कि आज की दौड़-भाग भरी जिंदगी में प्राणायाम करने से तनाव कम होता है, परिणामतः स्ट्रेस हार्मोन्स कम स्रावित होते हैं तथा गुड हार्मोन्स का स्राव अधिक होता है। गुड हार्मोन्स के अधिक स्रावित होने से प्राणायाम करने वाले लोगों के अधिकांश भयानक असाध्य एवं आज के चिकित्सा विज्ञान के लिए पहेली बने रोग जैसे मधुमेह, मोटापा, उच्च रक्तचाप, अवसाद, अनिद्रा, माइग्रेन, थायरॉइड, पार्किंसन, हृदयरोग, अस्थमा, ब्रोनकाइटिस, सफेद रोग, अर्थराइटिस, स्पेण्डोलाइटिस, विभिन्न प्रकार की हैपेटाइटिस, गुर्दे की भयंकर समस्या, लीवर की समस्या, गैस, अम्लता आदि ठीक हो जाते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो प्राणायाम से साधक को दिव्य

आनंद की प्राप्ति होती है। यही कारण है कि प्राचीन काल में ऋषि प्राणायाम की विभिन्न विधियों का अभ्यास करते थे। महर्षि पंतजलि के अनुसार

“तक्षीयते प्रकाशावरणम्”

(योगदर्शन : 2.52)

अर्थात् प्राणायाम की दक्षता प्राप्त करने पर चित्त निर्मल हो जाता है, और मस्तिष्क में ज्ञान का प्रकाश भर जाता है। यद्यपि प्राणायाम की विभिन्न विधियाँ शास्त्रों में वर्णित हैं और प्रत्येक प्राणायाम का अपना एक विशेष महत्व है। तथापि सभी प्राणायामों का व्यक्ति प्रतिदिन अभ्यास नहीं कर सकता। अतः हमने गुरुओं की कृपा व अपने अनुभव के आधार पर प्राणायाम की एक सम्पूर्ण प्रक्रिया को विशिष्ट वैज्ञानिक रीति व आध्यात्मिक विधि से आठ प्रक्रियाओं में क्रमबद्ध व समयबद्ध किया है। प्राणायाम के इस पूर्ण अभ्यास को करने से व्यक्ति को इनके शारीरिक व मानसिक लाभ होते हैं।

एक-एक सिस्टम के असन्तुलन से अनेक प्रकार की व्याधियाँ या विकार उत्पन्न होते हैं। भाषा कुछ भी हो भाव विज्ञान एवं अध्यात्म का एक ही तात्पर्य है। भाषा तो मात्र भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है लेकिन चार सौ वर्षों की गुलामी की आत्मग्लानि के दौर से हम कुछ ऐसे गुजरे कि हमें वात, पित्त व कफ की बजाय Anabolism, Catabolism, Metabolism ठीक से समझ आने लगे। अपनी परम्परा, संस्कृति व ज्ञान को हम अज्ञानवश आत्मगौरव के रूप में न देखकर आत्मग्लानि से भर गये। ‘चक्र’ पढ़कर चक्कर में पड़ गये परन्तु System शब्द को पढ़कर हम अपने आप को Systematic कहने लग गये जबकि प्राचीन चिकित्सा ज्ञान व आधुनिक चिकित्सा ज्ञान का तात्पर्य एक ही था।

उदाहरण के लिए एण्डोक्राइन सिस्टम के असन्तुलन से तनाव व तनाव जनित, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, अवसाद, मोटापा व मधुमेह आदि अनेक जटिल रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसी तरह से स्केलेटल सिस्टम के असंतुलन से शताधिक प्रकार का (सौ से अधिक प्रकार का) तो आर्थराइटिस होता है एवं

मासपेशियों की विकृतियों का भी व्यक्ति शिकार हो जाता है। कहने का तात्पर्य है कि आन्तरिक सिस्टम में आया किसी भी तरह का असंतुलन ही रोग है जबकि भीतर का संतुलन ही आरोग्य है।

लाखों करोड़ों लोगों पर योग के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रयोग से हमने ये पाया है कि मुख्यतः आठ प्राणायामों के विधिपूर्वक एक सुनिश्चित समय एवं संकल्पबद्ध अभ्यास से हमारे आठों चक्र या आठों तंत्र (सिस्टम) पूरी तरह से संतुलित हो जाते हैं। परिणामतः हम एक निरामय जीवन योग से पाते हैं। साथ ही हम दवा के रूप में जो कैमिकल साल्ट या हार्मोन बाहर से ले रहे थे, धीरे-धीरे उसकी आवश्यकता नहीं रह जाती क्योंकि जो हम बाहर से ले रहे थे वो सारे कैमिकल साल्ट या हार्मोन्स हमें भीतर से ही प्राप्त हो जाते हैं।

योग एलोपैथी की तरह एक पिजन होल ट्रीटमेन्ट न होकर आरोग्य की एक सम्पूर्ण संकल्पना है। आपातकालीन चिकित्सा व शल्य चिकित्सा को छोड़कर शेष चिकित्सा के सभी क्षेत्रों में योग एक श्रेष्ठतम चिकित्सा विद्या है। योग के साथ कुछ जटिल रोगों में यदि आयुर्वेद का भी संयुक्त प्रयोग होता है तो उपचार का असर अत्यधिक प्रभावी हो जाता है।

उक्त आरोग्य पक्ष के साथ-साथ योग का आध्यात्मिक पक्ष बहुत ही विराट है। यद्यपि योग का मुख्य लक्ष्य समाधि की प्राप्ति या परम सत्य का साक्षात्कार है। साथ ही रोग तो स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं अर्थात् योग से व्याधि की परिसमाप्ति तो योग का बायो प्रोजेक्ट है। मुख्य लक्ष्य तो समाधि ही है, यह हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। योग के बारे में ये विचार मात्र बौद्धिक व्यायाम नहीं, कोई सपना, प्रलोभन या आश्वासन नहीं अपितु योग के प्रयोग का यथार्थ है। मैं आश्चर्य हूँ कि आगे आने वाले समय में विश्व आग्रह रहित होकर योग को आत्मसात करेगा और योग से एक शान्त, स्वस्थ, संवेदनशील व समृद्ध राष्ट्र व विश्व का निर्माण होगा। साइंस ऐन्ड स्प्रिच्युलिटी, भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के समन्वय से पूर्ण विकास होगा।

स्रोत—जिज्ञासा अंक 24 (2010) में प्रकाशित लेख

आजादी का अमृत महोत्सव

सृष्टि का स्पंदन है नवसंवत्सर

—नीरजा माधव

नवसंवत्सर हमें हमारी समृद्ध सांस्कृतिक थाती से परिचित कराने और उसे सहेजने का भी अवसर देती है।

सनातन धर्म के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से भारतीय नवसंवत्सर का आरंभ होता है। इसके स्वागत में हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यह हमें हमारी संस्कृति से परिचित कराने और उसकी महत्ता रेखांकित करने का भी अवसर उपलब्ध कराता है। इसी दिन को ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का दिन भी माना जाता है। सृष्टि की उत्पत्ति के प्रथम दिन से ही भारतीय संस्कृति में नववर्ष मनाने की परंपरा है। यह नववर्ष विश्व समाज में मनाए जाने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के नए वर्षों से अलग है। यह स्वयं में आध्यात्मिक रहस्य भी समेटे हुए है। भारतीय नवसंवत्सर रात भर जागकर नाचने-गाने का अवसर नहीं है। वास्तव में यह उत्सव प्रकृति के साथ एक समन्वय स्थापित कर वर्ष भर के लिए निर्बाध जीवन की कामना है। यह अवसर प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों से तादात्म्य बैठाने के साथ-साथ उनके अनुरूप स्वयं को ढालने का संदेश देता है। इसीलिए यह संकल्प लेने और साधना करने का दिन है। संकल्प और साधना के लिए ही नवरात्र का प्रावधान किया गया है। सृष्टि के साथ अपना एक अव्यक्त सा रेशमी नाता अनुभव करने का भाव हर मन में भर जाता है इस दिन सूरज की स्वर्णिम किरणें सभी को स्नेह से सहलाते हुए मानो जीवन के उस अबुझ रहस्य को समझने का संकेत करती हैं, जिसके लिए हम पृथ्वी पर आए हैं। धरती से लेकर आकाश तक फैला मौन उस असीम अबुझ का भेद खोलने लगता है। भोगमय जीवन से अलग हटकर उसके वास्तविक मर्म को जानने का पर्व बन जाता है यह उत्सव। जीवन की परिपूर्णता पर बल देने के कारण नवसंवत्सर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे पुरुषार्थों को भी सिद्ध करने का अवसर बन जाता है। शिव के एकात्म अस्तित्व का बोध कराने वाला पड़ाव है हमारा नवसंवत्सर।

इस दौरान पूरी सृष्टि में एक अलग सा स्पंदन महसूस करने लगता है हर प्राणी। चैत्र की गंध वाही वायु के साथ हर चित्त उन्मन होता है और विकल हो उठता है अपने अनंत प्रियतम से मिलने को। इसलिए विरह की पीर कुछ अधिक ही टीस देने लगती है चैत्र मास में। प्रिय अनंत, जिससे बिछड़कर प्राणी इस संसार में भटकता है, उसी की खोज में मन मृगछौना सा कुछ और ही भटकने लगता है। पूरी प्रकृति में मिलन और सौंदर्य की एक आतुरता दिखाई देने लगती है। यह ऋतु माधव की ऋतु है। माधव यानी परब्रह्म पूरी सृष्टि में वसंत बनकर छा जाता है। आनंद बन छलक उठता है प्रकृति में। प्रेम का पाथेय लेकर पुष्प खिलखिला उठते हैं। चंद्रमा की कलाएं अपनी शीतलता और स्निग्धता में ईश्वरीय चिंतन के लिए एक आध्यात्मिक वातावरण का सृजन करने लगती हैं। परब्रह्म की प्रकृति स्वरूपा शक्ति आह्लादित होती है। इसीलिए हम शक्ति की आराधना से इस नवसंवत्सर का आरंभ करते हैं।

शक्ति स्त्री रूपा है। वही लक्ष्मी, गौरी, सरस्वती का रूप धारण करती है। दुर्गा, काली, शिवा, धात्री आदि अनेक रूपों में हम अखिल ब्रह्मांड में मातृ तत्व के रूप में व्याप्त इसी एकमात्र शक्ति का आह्वान करते हैं और इस भाव से भरते हैं कि इस धरती पर मां की तरह कोई शक्ति निरंतर हमारा सृजन और पालन कर रही है। हम सब उसकी संतानें हैं, परन्तु जब कभी हम अहंकार में उस शक्ति को नकारने का उपक्रम करने लगते हैं या सृष्टि को बाधा पहुंचाते हैं तो वह शक्ति चंडी का रूप धारण कर हमें रोकती है। शक्ति का सकारात्मक उपयोग करने की प्रेरणा देने आता है नवसंवत्सर, ताकि संपूर्ण मानवता के लिए हम कष्टकारी न बनने पाएं। भोग और भौतिकता की चाहत हमें शांत नहीं रहने देती। हमारे वैदिक ऋषि मुनि यह आह्वान करते थे कि धरती पर सभी शांतचित्त हों। मनुष्य मनुष्य का या प्रकृति का शत्रु न बने, इसकी कामना हमारे ऋषियों-मुनियों ने की।

हम यह समझें कि मानव कल्याण की बातें समझाने आता है नवसंवत्सर। इसीलिए नवरात्र के रूप में शक्ति के जागरण का महापर्व भी है यह उत्सव। प्रकृति के

सौंदर्य और साम्यावस्था में अपनी आध्यात्मिक शक्तियों का जागरण और जीवन के प्रति नवस्फुरण उद्देश्य होता है इस नवसंवत्सर में। आंखें मूंदे रखने से नए सूरज का दर्शन नहीं हो सकता, इसलिए नए संकल्प के साथ नए अरुणोदय को अपनी आंखों में, हृदय में उतारना होता है। मन को भर लेना होता है चिड़ियों की चहचाहाट से। स्वीकार करना होता है सह-अस्तित्व की संकल्पना को। संभवतः इसीलिए यह भारतीय नववर्ष मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत है। इसमें हमारे मंत्र द्रष्टा ऋषियों की वैज्ञानिक सोच और सृष्टि अंतर्निहित थी। नवसंवत्सर को वैश्विक मानवीय मूल्यों और सत्य के साक्षात्कार के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करना चाहिए। इसी क्रम में यह भी स्मरण रखना चाहिए कि नवसंवत्सर भारत की कालगणना की समृद्ध परंपरा को भी रेखांकित करता है। कालगणना के आकलन का आधार अत्यंत व्यापक है। यह सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी की गति के आकलन पर आधारित है। यह जानना सुखद है कि हजारों वर्ष पूर्व हमारे पुरखे पृथ्वी और सूर्य की गति की गणना करना जानते थे। सबसे अधिक प्रचलित ग्रेगेरियन कैलेंडर में केवल दो ही बातों का ज्ञान मिलता है—एक दिनांक और दूसरे वार का, जबकि विक्रम संवत् के पंचांग में पांच बातों की गणना की जाती है। पंचांग तिथि, वार, नक्षत्र, करण और योग सूचकों के साथ तैयार होता है। इसी प्रकार प्रत्येक माह की अवधि भी नक्षत्र की कालावधि से निर्धारित होती है। वास्तव में इसीलिए इसमें त्रुटि की आशंका न्यून होती है। यह काल गणना वैज्ञानिक भी है और प्रामाणिक भी। ऐसे में इसका स्वागत करते समय हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यह हमें हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराने और उसे सहेजने का भी अवसर उपलब्ध कराता है।

साभार—दैनिक जागरण

2.4.2022